

चीन पर भारत की आयात नरिभरता

प्रलिस के लयि:

गलवान घाटी संघर्ष, भारत-चीन तवांग झड़प, भारत-चीन व्यापार संबंध

मेन्स के लयि:

भारत-चीन व्यापार संबंध, भारत की भारी आयात नरिभरता और चीन के साथ व्यापार घाटा, चीन पर आयात नरिभरता का प्रतयुत्तर

चर्चा में क्यों?

हाल की [तवांग झड़प](#) ने चीन के साथ व्यापार संबंधों को खत्म करने की मांग को जन्म दिया है। हालाँकि मांगों के वपिरीत, चीन से भारत के आयात में वर्ष 2020 में [गलवान घाटी संघर्ष](#) के बाद तेज़ी से वृद्धि देखी गई है।

चीन के साथ भारत के व्यापारिक संबंध:

- सबसे बड़े भागीदारों में से एक: अमेरिका के बाद चीन भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।
 - वर्ष 2021-22 में भारत-चीन द्वपिकषीय व्यापार 115.83 बलियन अमेरिकी डॉलर था, यह भारत के कुल 1,035 बलियन अमेरिकी डॉलर के व्यापार का 11.2% (भारत-अमेरिका व्यापार - 11.54%) है।
 - लगभग 2 दशक पहले एक व्यापारिक भागीदार के रूप में चीन 10वें स्थान पर था,लेकनि वर्ष2002-03 से यह शीर्ष भागीदारों में से एक बन गया है।
 - चीन वर्ष 2011-12, 2013-14 से 2017-18 और 2020-21 में भारत का शीर्ष व्यापारिक भागीदार था।

नोट:

- अमेरिका और चीन के अलावा वर्ष 2021-22 के दौरान भारत के शीर्ष 10 व्यापारिक साझेदारों में अन्य 8 देश संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, इराक, सगिापुर, हॉन्गकॉन्ग, इंडोनेशया, दक्षणि कोरया और ऑस्ट्रेलया थे।
- अमेरिका और चीन के साथ भारत के व्यापार में प्रमुख अंतर:
 - अमेरिका और चीन के साथ भारत के व्यापार में प्रमुख अंतर यह है किवर्ष 2021-2022 में [भारत का अमेरिका के साथ व्यापार अधशिस 32.85 बलियन अमेरिकी डॉलर है](#), जबकि चीन के साथ व्यापार में भारत को 73.31 बलियन अमेरिकी डॉलर (2021-22) का नुकसान हुआ है जो कसी भी देश के लयि सबसे अधिक है।
 - चूँकि चीन से भारत का आयात (2001-02 और 2021-2020 के बीच) 2 बलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 94.57 बलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है, (इसी अवधि में) भारत द्वारा चीन को लगभग 1 बलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर केवल 21 बलियन अमेरिकी डॉलर का नरियात कया गया है।
- प्रमुख आयात:
 - भारत द्वारा आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएँ:
 - वदियुत मशीनरी और उपकरण तथा उसके पुर्जे
 - टेलीवजिन छवि एवं ध्वनारिकॉर्डर
 - नाभकीय ररिक्टर, बॉयलर, मशीनरी और यांत्रिक उपकरण तथा उनके पुर्जे
 - जैवकि रसायन
 - प्लास्टकि और इससे बनी वस्तुएँ
 - उर्वरक
 - सबसे महत्त्वपूर्ण आयातति वस्तुएँ हैं:

- परसनल कंप्यूटर (लेपटॉप, पामटॉप आदी) > मोनोलिथिक इंटीग्रेटेड सर्कटि-डिजिटल > लथियम-आयन > सोलर सेल > यूरिया

■ प्रमुख नरियात:

- वर्ष 2021-22 में, चीन को भारत का नरियात उसके कुल शपिमेंट का 5% था। शीर्ष नरियात वस्तुओं में शामिल हैं:
 - अयस्क, सलैग और राख
 - कार्बनिक रसायन, खनजि ईंधन/तेल और उनके आसवन के उत्पाद, बटिमिनिस पदार्थ, खनजि मोम;
 - लोहा और इस्पात
 - एल्यूमीनियम और इससे बनी वस्तुएँ
 - कपास
 - एकल वस्तुओं में लाइट नेफथलीन भारत का सबसे मूल्यवान नरियात था

चीन पर भारी आयात नरिभरता का अर्थ:

- सरकार के दृष्टिकोण से राजनीतिक और सुरक्षा चुनौतियाँ तब गहरी हो जाती हैं जब देश एक दुश्मन या अमित्र देश से उत्पादों और सेवाओं के आयात पर नरिभर होता है।
- भारत अपने फार्मास्युटिकल उद्योग में उपयोग होने वाले अधिकांश 'सक्रिय दवा सामग्री' (API) का आयात चीन से करता है। चीनी API की लागत भारतीय बाज़ार की तुलना में कम है।
 - समस्या की गहराई कोवडि-19 महामारी के दौरान तब सामने आई जब यात्रा प्रतिबंधों के कारण भारत में चीनी API के नरियात को अस्थायी रूप से प्रतिबंधित कर दिया गया और इसके परिणामस्वरूप भारत को API के अपने नरियात में भी कटौती करनी पड़ी।
- भारत में उत्पादित कोयला ऊर्जा का लगभग 24% उन संयंत्रों से आ सकता है जो चीन से आयातित महत्त्वपूर्ण उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं। इसलिये इसे रणनीतिक नरिभरता नहीं माना जा सकता है, लेकिन निश्चिती रूप से यह एक सुरक्षा चुनौती है।
 - जबकि चीन से इस तरह के आयात को सीमिति करने या यहाँ तक कि प्रतिबंधित करने की मांग की जा रही है, इसका सीधा सा अर्थ होगा कि नजि भारतीय वदियुत कंपनियों को उच्च लागत का सामना करना पड़ेगा।

चीन पर अति-नरिभरता का मुकाबला करने हेतु भारत द्वारा उठाए गए कदम:

- चाइनीज एप्स पर बैन।
- भारत द्वारा कई क्षेत्रों में चीनी निवेश की जाँच में सख्ती की गई है, साथ ही सरकार द्वारा चीनी कंपनियों को 5G परीक्षण से बाहर रखना।
- API के लिये आयात नरिभरता में कटौती - बलुक डरग पार्क और PLI योजना को बढ़ावा देना।
- घरेलू फर्मों के अवसरवादी अधगिरहण पर अंकुश - चीन पर FDI प्रतिबंध।
- चीनी बजिली उपकरणों के आयात पर वास्तविक प्रतिबंध।
- स्थानीय वनिर्माताओं के हति में एल्यूमीनियम के कुछ सामानों और रसायनों पर 5 वर्ष के लिये एंटी-डंपिंग शुल्क लगाया गया।
- भारत को वैश्विक आपूर्तिकर्त्ता बनाने और आयात बलियों में कटौती के लिये 12 क्षेत्रों की पहचान।
 - ये क्षेत्र हैं खाद्य प्रसंस्करण, जैविक खेती, लोहा, एल्यूमीनियम और ताँबा, कृषि-रसायन, इलेक्ट्रॉनिक्स, औद्योगिक मशीनरी, फरनीचर, चमड़ा और जूते, ऑटो के पुर्जे, कपड़ा और कवरऑल, मास्क, सैनिटाइजर और वेंटिलिटर।

आगे की राह:

- भारत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उत्पादों के आयात पर अपनी सामरिक नरिभरता को पूरी तरह समाप्त नहीं कर सकता। हालाँकि, चीन की भूमिका को व्यापार क्षेत्र में कम करके भारत इस क्षेत्र में नरिभरता में वविधिता ला सकता है।
 - भारत, व्यापार क्षेत्र में नरिभरता में वविधिता, अमेरिका, यूरोप, दक्षिण कोरिया और जापान के साथ अधिक आयात-नरियात करके ला सकता है। इस तरह भारत उन देशों पर अपनी नरिभरता बढ़ाएगा जिनके साथ इसके अच्छे राजनीतिक संबंध भी हैं।
- वहाँ आत्मनरिभरता को और अधिक प्रोत्साहन देना एक वविकपूर्ण तरीका हो सकता है, जिन क्षेत्रों में भारत एक शुद्ध आयातक है और इसमें प्रौद्योगिकी तथा पूँजी की बड़ी भूमिका होगी।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs)

प्रश्न, "चीन एशिया में संभावित सैन्य शक्ति स्थिति को वकिसति करने के लिये अपने आर्थिक संबंधों और सकारात्मक व्यापार अधशेष का उपयोग, उपकरण के रूप में कर रहा है"। इस कथन के परपिकष्य में, उसके पड़ोसी देश भारत पर इसके प्रभाव की वविचना कीजिये। (2017)

स्रोत:इंडियन एक्सप्रेस

